

स्वामिनि साह सींगार (७३)

मुहिंजो श्याम सुन्दर सां प्यार आ
जेको अमड़ि यशोदा जो बार आ
आहे शोभा जो धामु, नन्द नन्दन घनश्याम
लालन ललित ललाम, मुहिंजे अखियुनि आराम
उहो ग्वाल बालनि सरिदारू आ ॥

सांवरो सलोनी पीतपट धारी,
मोर मुकुट धार प्यारो गिरिधारी
मुरलीअ वारो आहे बांकल बिहारी,
स्वामिनि साह सींगारू आ ॥

मृदु मुस्कान सां मनड़ो खसे थो,
जीय प्राणनि में जो सदां वसे थो
गोपियुनि खिजाए ऐं हर हर हंसे थो,
सभिनी गुणनि जो भण्डार आ ॥

कुंजनि कलौली कान्हा मुरली वजाए थो,
गोपियुनि नचाए रस रासिड़ी रचाए थो
प्रेम परिवश श्याम मौजड़ी मचाए थो,
क्रोड़ काम खां भी शोभ्या अपार आ ॥

रूपु मनोहर ओ नैन विशाला,
ललित त्रभंगी गले बन माला
करूणा कोमल कृष्ण अति कृपाला,
सरिसिज खां भी सुकुमार आ ॥
गेंद जे बहाने कालीनाग नथे आयो,
गिरिराज धारे इन्द्र गर्व गंवायो
मोहु मेटे बृम्हा खे रूपु दर्शायो,
लालन लीला तां बान्ही बलहार आ ॥